बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)
Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 139 /2025) **Year: 7th**

जिला: बाँदा | **जारी करने की तिथि: 03.10.2025**

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ कद्दू वर्गीय फसलों यथा लौकी, करेला, खीरा, तरोई, आदि, भिंडी, लोबिया, ग्वार, चौलाई की खड़ी फसलों में खरपतवार एवं मृदानमी प्रबंधन करें। ➢ बैगन, टमाटर, मिर्च की रोपाई करें। ➢ मिर्च, टमाटर, बैगन, भिंडी की खड़ी फसलों में सफेद मक्खी व अन्य चूसने वाले कीट आने की संभावना है अतः उपयुक्त कीटनाशी से पादप सुरक्षा करें। ➢ गोभी वर्गीय फसलों की रोपाई कर दें। ➢ फ्रांसबीन, पालक, मूली, मेथी, गाजर, शलजम, चुकंदर, लहसुन, सब्जी मटर तथा आलू की बुआई कर दें।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	➢ **धान–:** धान की शीघ्र तैयार होने वाली किस्मों में 80 प्रतिशत दाने पड़कर कड़े होने पर कटाई कर लें। ➢ **अरहर–:** खेत में पानी नहीं जमने दें तथा उचित जल निकास का प्रबन्धन करें। ➢ **तोरिया–:** सिंतम्बर माह में बोई गई तोरिया की फसल में घने पौधों को निकाल कर पौधों की आपसी दूरी 10–15 सेमी. कर लें तथा निराई–गुड़ाई भी कर देनी चाहिये। यदि सिचांई उपलब्ध हो तो तोरिया में फुल निकलने पर अर्थात बुवाई से 25–30 दिन बाद एक सिंचाई अवश्य कर दें। ➢ **राई– सरसों–:** राई–सरसों की बुवाई माह के अन्त में प्रारम्भ करें। समय पर बुवाई करने से माहूँ–चेपा, कीट का प्रकोप कम होता है। उन्नत किस्मों के प्रमाणित बीज की बुवाई करें। ➢ **चना, मटर, मसूर–:** चना, मटर, मसूर की बुवाई के लिये फसल कटाई के बाद खेत की तैयारी प्रारम्भ करें। इन फसलों को 30 सेमी. की दूरी पर कतार में बोना चाहिये। प्रति हेक्टेयर देशी या छोटे बीज बोने के लिये 60–75 किग्रा0 बड़े बीज वाले चना एवं मटर के लिये 80–100 किग्रा0 तथा मसूर के लिये 30–35 किग्रा0 बीज की आवश्यकता पड़ती है। इन फसलों को उपचारित करके ही बोना सुनिश्चित करें। ➢ रबी में बोयी जाने वाली दलहनी–तिलहनी फसनों में खरपतवार प्रबन्धन हेतु खरपतवार नाशी जैसे पैन्डीमेथलिन, टोपरामिजोन, क्यूजालोफोप मिथाइल, आक्सिफ्लुओर्फेन, प्रोपाक्यूजाफोप आदि की उपलब्धता सुनिश्चत करें जिससे समय पर प्रयोग किया जा सके। ➢ रबी फसलों के बुवाई हेतु प्रयोग किए जाने वाले उर्वरकों की व्यवस्था अबिलम्ब करलें।

		➢ अगर किसान भाईयों ने मृदा परीक्षण कराया है तो मृदा परीक्षण रिपोर्ट को कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से समझ कर फसल में उसी अनुसार उर्वरकों का व्यवहार करें। ➢ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। सामान्यतः प्रति पौधा प्रति वर्ष उम्र के अनुसार 100 ग्राम एन पी के मिश्रण का प्रयोग करना चाहिए। ➢ रबी की तिलहनी एवं दलहनी फसलों में गन्धक का प्रयोग क्रमषः 30 कि0ग्रा0 एवं 20 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से अवष्य करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्व प्रबन्धन करते रहे। ➢ दलहनी फसलों की बुवाई में आधारीय उर्वरक के रूप में 50 कि0ग्रा0 डी ए पी एवं 10 कि0ग्रा0 एम ओ पी का प्रति हेक्टेयर के दर से प्रयोग करना चाहिए। ➢
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ बकरी को सूखे स्थानों में बांधे और उनके बाँधने के स्थान पर साफ सफाई रखें जिससे उन्हें बीमारी से बचाया जा सके। ➢ बकरी का अलग से बाड़ा अवश्य बनाएं और उनके बैठने के लिए लकड़ी या बांस का मचान बनाएं जिससे उन्हें नमी से बचाया जा सके। ➢ बकरियों को अन्तःपरजीवी नाशक दवा 3–4 महीने के अंतराल पर अवश्य देवें जिससे बकरियों की शारीरिक वृद्धि एवं भोजन उपयोग क्षमता बढ़ सके। ➢ बकरियों में होने वाले प्रमुख रोग (पी०पी०आर०) व एन्टिटॉक्सीमिया हे जिससे बचाव हेतु इनका टीकाकरण समय–समय पर करायें तथा बीमारी से होने वाले नुक्सान से बचा जाए। ➢ सभी बकरियों को सामूहिक रूप से बरसात से पहले कृमिनाशक दवा जरूर दें। ➢ बरसात के मौसम में सूरज निकलने के दो घंटे बाद ही बकरियों को चराने जाना चाहिए और धूप रहते हुए ही चरा के वापिस ले आना चाहिए जिससे इनमे रोगों की संख्या कम होती है। ➢ रात का बचा हुआ चारा साथ ही गीली घास एवं गीला चारा बकरियों को न खिलावे। ➢ बकरियों को चरने के अलावा नियमित रूप से 100–150 ग्राम दाना व 1.5–2 किलोग्राम सूखा चाराध्भूसा देना चाहिए जिससे इनकी बरसात का मौसम में भी शारीरिक वृद्धि नहीं रुकेगी।

4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ धान में तना बेधक कीट के निगरानी हेतु गंधपाश (फेरोमैन ट्रैप) का प्रयोग करना चाहिए व नियंत्रण हेतु कार्बाफ्यूरान 3 प्रतिशत 20 किग्रा0 अथवा कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4 प्रतिशत की 20 किग्रा0 मात्रा को 3–5 सेमी0 पानी में बुरकाव करें। हरा फुदका के नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बुरकाव करें। भूरा फुदका के नियंत्रण हेतु यदि सम्भव हो तो खेत से पानी निकाल देना चाहिए व यूरिया की टाप ड्रेसिंग रोक देनी चाहिए। नीम तेल @ 5 मिली प्रति ली के घोल का छिड़काव करें अथवा पाईमेट्रोजेन 50 प्रतिशत डब्ल्यू जी 300 ग्रा0 प्रति हे0 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ अरहर में चोटी बेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 2. 00 लीटर प्रति हे0 800–1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ मक्का/ज्वार/बाजरा में तना बेधक कीट के नियंत्रण हेतु कार्बाफ्यूरान 3 प्रतिशत 20 किग्रा0 अथवा कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4 प्रतिशत की 20 किग्रा0 मात्रा का प्रयोग करना चाहिय अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.50 लीटर मात्रा का 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करना चाहिये। मक्का में फाल आर्मीवर्म के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट कीटनाशी की 4 ग्राम मात्रा प्रति 10 लीटर पानी की दर से प्रयोग करें अथवा क्लोरंतरनिलीप्रोल रसायन का 4 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर पानी की दर से प्रयोग करें। ➢ उर्द/मूँग में बालदार गिडार व फली बेधक के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। 5 गंधपाश (फेरोमैन ट्रैप) प्रति हे0 की दर से प्रयोग करना चाहिए। बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिडकाव करना चाहिए। एजाडिरैक्टिन (नीम आयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.5 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 1. 25 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए। उर्द/मूँग में पीला मोजैक रोग के वाहक कीट सफेद मक्खी व पाड सकिंग बग की रोकथाम हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्ल्यू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ टमाटर, फूलगोभी, मिर्च, शिमला मिर्च, पत्तागोभी, बैगन की नर्सरी में प्रारम्भ में सफेद मक्खी के प्रवेश को रोकने के लिए लो–टनल पॉलीहाउस का प्रयोग करें। पूर्व में रोपित बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम

		गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	अक्टूबर माह के पहले पखवाड़े में वर्षा लगभग समाप्त हो जाती है और मौसम ठंडा व शुष्क होने लगता है। नमी घटने पर भी फसलों (धान, सोयाबीन, उड़द, मूंग, अरहर, चना, सरसों आदि) में रोगों का प्रकोप बना रहता है। समय पर रोग प्रबंधन से फसल की पैदावार सुरक्षित रखी जा सकती है। धान के संभावित रोग– झुलसा (ब्लास्ट), शीथ ब्लाइट, बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट प्रबंधन– ➢ खेत से अतिरिक्त पानी निकालें और जलभराव न होने दें। ➢ ब्लास्ट रोग के नियंत्रण हेतु ट्राइसाइक्लोजोल 0.6 ग्राम प्रति लीटर या इजोप्रोथियोलेन 1.5 मिली प्रति लीटर जलीय धोल का छिड़काव करें। ➢ शीथ ब्लाइट के नियंत्रण हेतु वैलिडामायसिन 2.5 मिली प्रति लीटर या हेक्साकोनाजोल 2 मिली प्रति लीटर धोल का छिड़काव करें। ➢ बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट के नियंत्रण हेतु कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2.5 ग्राम प्रति लीटर स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 0.1 ग्राम प्रति लीटर धोल का छिड़काव करें। सोयाबीन (कटाई पूर्व अवस्था) के संभावित रोग– चारकोल रॉट, एन्थ्रेक्नोज, बैक्टीरियल ब्लाइट प्रबंधन– ➢ पौधों की जड़ों के पास ट्राइकोडर्मा 5 से 10 किग्रा प्रति एकड़ की दर से गोबर की सडी हुई खाद में मिलाकर डालें। ➢ एन्थ्रेक्नोज व ब्लाइट रोग के नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिम एव मैनकोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर धोल का छिड़काव करें। ➢ कटाई से पहले दवा छिड़काव 15 दिन से कम अवधि में न करें। उड़द व मूंग के संभावित रोग– वेब ब्लाइट, लीफ स्पॉट, पीला मोजेक वायरस प्रबंधन ➢ रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट करें। ➢ वेब ब्लाइट के नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम प्रति लीटर धोल का छिड़काव करें। ➢ लीफ स्पॉट के नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर धोल छिड़काव करें। ➢ पीला मोजेक के वाहक सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मिली प्रति लीटर या थायोमेथोक्साम 0.25 ग्राम प्रति लीटर धोल का छिड़काव करें। अरहर के संभावित रोग– अल्टरनेरिया पत्ती झुलसा, फाइटोप्थोरा ब्लाइट, पीला मोजेक प्रबंधन– पत्ती झुलसा के नियंत्रण हेतु क्लोरोथालोनिल 2.5 ग्राम प्रति लीटर धोल का छिड़काव करें। ➢ ब्लाइट के नियंत्रण हेतु मेटालाक्सिल एवं मैंकोजेब के मिश्रित रसायन की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर की दर से जलीय घोल का छिड़काव करें। ➢ पीला मोजेक के वाहक सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मिली प्रति लीटर या थायोमेथोक्साम 0.25 ग्राम प्रति लीटर धोल का छिड़काव करें। चना (नई बोआई हेतु) के संभावित रोग– बीज जनित फफूंद व डैम्पिंग–ऑफ प्रबंधन– ➢ बीजोपचार करने हेतु कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किग्रा एवं थायरम 2 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से जैविक उपचार करें। ➢ बीजों के जैविक उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा 5 से 10 ग्राम प्रति किग्रा बीज का लेप बीजोपचर हेतु करें।

		सामान्य सुझाव– ➢ रोग प्रबंधन हेतु खेत की नियमित निगरानी करें। ➢ छिड़काव सुबह या शाम को करें तथा दवा बदल–बदल कर प्रयोग करें। ➢ दवा का छिड़काव बारिश या ओस सूखने के बाद ही करें। ➢ फसल अवशेषों को नष्ट करें, जिससे अगले मौसम में रोग न फैले।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	➢ फल पौधों का रोपण इस माह के मध्य तक पूरा करें। ➢ वायु–अवरोधक बीजू पौधें इस माह में भी लगा सकते है। ➢ पहले से लगे वायु–अवरोधक वृक्षों की बाग में फैली शाखाओं को काट दें। ➢ मुलवृंत पौधों से फुटान को ध्यानपूर्वक हर 15 दिन बाद हटा दें। ➢ छोटे पौधों को सीधा रखने के लिए बंछटी का सहारा दें। ➢ फलदार पौधों के निचले हिस्से से निकले अनउत्तपादक सकर्स को हटा दें । कटे हिस्सों पर बोर्डेक्स पेस्ट का लेप करें। ➢ फलदार पौधों के तने के चारो तरफ गहरी खुदाई करें ताकि खरपतवार अच्छी तरह से गहराई से निकल सके, परन्तु जड़ों को तथा तनें को कोई नुकसान न पहुंचें। ➢ किन्नौ पौध प्रर्वधन हेतु जट्टी–खट्टी की पौध तैयार करने के लिये बीज की बुआई की जा सकती है। ➢ चश्मा चढ़ाने के लिये उपयुक्त समय है । इसकी तैयारी पुर्ववतः रखें । चश्मा चढाने से पहले मुलवृंत को एकल तना बना दें तथा आस–पास की सारी टहनियों को काट दें। ➢ अक्टूबर माह के अंत में जिस मुलवृंत में सफेद धारियां नजर आये उसे प्रर्वधन के लिये चुने। ➢ उत्तम किस्म के पौधे की आंख को प्रर्वधन के लिये चयन करें। ➢ मुलवृंत पर 1.5 सेमी. क्षितिज चीरा लगायें तथा एक चीरा 3 सेमी का ऊर्ध्वाधर बनाये इसमें चयन की हुई आंख को लगाकर सुतली या पोलीथीन की पट्टी से बांध दें। याद रखें कलिका बांधते समय न दबे। ➢ नये तथा पांच साल से कम आयु के पौधों में यदि चाहे तो दलहनी फसलों की बुवाई की जा सकती है। दलहनी फसलों के बुवाई करने से भूमि की उर्वरा शक्ति में बढ़ोत्तरी होती है। ➢ अक्टूबर माह में पपीते की रोपाई करें । 90 ग्राम यूरिया, 250 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट एवं 110 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश का मिश्रण मिलाकर पौधे के तने से दूर एक इंच गहरा गोलाकार गड्ढा बनाकर प्रत्येक पौधे को क्यारी में लगााने के बाद 2 महीने के अंतराल पर 6 बार प्रयोग करें। ➢ नींबू में कैंकर ग्रस्त टहनियां काट दें, कैंकर रोग के प्रकोप को रोकने के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लीन १० ग्राम एवं कॉपर ऑक्सी क्लोराइड २०० ग्राम को १०० लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

		➢ नींबू के विकसित बाग (४–५ वर्ष) में १०० किलोग्राम गोबर की खाद , 1.२५ किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व ०.५० किलोग्राम मूरते ऑफ पोटाश एवं ०. ४५ किलोग्राम नत्रजन के साथ –साथ ०.२५ किलोग्राम जिंक सल्फेट का प्रयोग करें । ➢ अमरूद के एक वर्ष के पौधे के लिए प्रति वृक्ष ३० ग्राम नत्रजन जो बढ़कर क्रमशः ६ वर्ष या उससे अधिक उम्र के पौधे के लिए १८० ग्राम नत्रजन का प्रयोग करें ➢ बेर के वृक्षों में नत्रजन उर्वरक की दूसरी मात्रा दें। यह मात्रा 50 ग्राम नत्रजन से 250 ग्राम नत्रजन प्रति पौधें के हिसाब से प्रथम वर्ष से पांचवें या अधिक वर्ष तक के पौधों में दें। ➢ आम के फलदार पौधों में यदि अब तक गुम्मा रोग ग्रस्त टहनियां न हटा दी हो तो इस माह अवश्य हटा दें। गुम्मा रोग की रोकथाम हेतु नैपथलीन एसिटिक एसिड का २०० पी. पी. एम. अथवा प्लेनोफिक्स ४ मिलीलीटर प्रति ६ लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें तथा इसमें बाविस्टीन 0.1 प्रतिशत भी मिला दें। ➢ आँवला में शूट गाल मेकर से ग्रस्त टहनियों को काटकर जला दें तथा शुष्क विगलन की रोकथाम के लिए ६ ग्राम बोरेक्स प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें । ➢ केले के बाग में प्रति पौधा ५५ ग्राम यूरिया, १५५ ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट एवं २०० ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रयोग कर भूमि में मिला दें ।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ पॉलीथीन थैलियों जिनमें बीज अंकुरित नहीं हुए हैं को स्वस्थ व विकसित पौध से प्रतिस्थापित/प्रत्यारोपित करें। ➢ पौधशाला को खरपतवार से मुक्त रखने तथ जल निकासी नालियों/चैनलों को साफ रखें। ➢ पौधशाला में आद्रपतन या कमरतोड रोग की रोकथाम हेतु कार्बेन्डाजिम (10ग्राम)+मेन्कोजेब(25ग्राम) प्रति लीटर पानी के घोल से रोक के लक्षण दिखते ही सिंचाई करें। ➢ जून / जुलाई माह में रोपित पौध, जो कि मृत हो गए हैं, स्वस्थ पौधों से प्रत्यारोपित करें। ➢ रोपित पौधें के थालों में निराई गुड़ाई करें तथा साथ ही साथ उजागर जड़ों को पुनः मिट्टी से आच्छादित करें। ➢ पौधशाला में जल निकासी नालियों/चैनलों को साफ रखें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय 6. डॉ मयंक दुबे	7. डॉ दिनेश गुप्ता 8. डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 10. डॉ जगन्नाथ पाठक 11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार